पेज 1 का शेष भाग

अफ़सरों के संरक्षण में पुलिसिया डकैत

इससे पहले कि सूचना सुदीप तक पहुंचती, यह सूचना डॉ. सुनील के हाथ लग गई। उसने तुरंत 'कार्यवाही' कर के मौका से तमाम मालिकान सहित बोलेरो व डंपर को पकड़ लिया। मालिकान से पांच लाख में सौदा तय हो जाने पर डॉक्टर ने केवल डंपर को कब्ज़े में लेकर ड्राइवर की गिरफ़्तारी डलवा दी। इसके अलावा खालों की तुरंत सुपरदारी दिलाने का वायदा भी किया गया था।

अपने आप को बचाने हेतु ज़्यादा चालाकी दिखाते हुए डॉक्टर ने एफआईआर खुद दर्ज न कर के अपने मातहत एक एएसआई रविन्द्र द्वारा दर्ज करवा कर तफ़्तीश अपने हाथ में ले ली। उधर अगले ही दिन सोची-समझी योजना के तहत बाबू खान ने अपने आप को खालों का मालिक बता कोर्ट में सुपरदारी की दरख्वास्त लगा दी। इसमें कहा गया था कि खालें ताजा कटी गायों की नहीं, बल्कि कुदरतन मरी हुई गायों की है। मृत पशुओं की खाल उतारने का ठेका भी उनके ही गिरोह के एक आदमी के पास है जो इसमें गवाही दे देता है।

नियमानुसार कोर्ट द्वारा पुलिस रिपोर्ट मांगी गई तो डॉक्टर की खुद की हिम्मत तो हुई नहीं, इसलिए एएसआई रविन्द्र को एक लाख रुपये देने की पेशकश करते हुए डॉक्टर ने कहा कि वह खालों को छुड़ाने वाली रिपोर्ट लिख दे। लेकिन रविन्द्र ने ठोक कर ऐसी रिपोर्ट लिखी कि सुपरदारी नहीं हो पायी।

खुद बाबू खान द्वारा खालों का मालिक घोषित किये जाने के बाद इस तथ्य में कोई संदेह नहीं रह जाता कि खालों का असली मालिक डंपर ड्राइवर साबिर न हो कर बाबू खान तो कम से कम है ही, तथा एफआईआर में लिखे तथ्य कि खालों के साथ ताज़ा मांस व बाल भी चिपके हैं, इस बात को साबित करता है कि खालें ज़िंदा गायों को काट कर उतारी गयी थी। खालों के ताज़ा होने का इससे भी बड़ा सबूत यह है कि थाना सदर बल्लबगढ़ में रखी इन खालों से न केवल सारा थाना दुर्गन्धित हुआ पड़ा है, बल्कि आसपास के पूरे क्षेत्र में सड़ांध मची है। विदित है कि मृत पशुओं के खालों के गोदाम से कभी इतनी दुर्गन्ध नहीं फ़ैलती।

हापुड़ मंडी के जानकार बताते हैं कि मृत गायों की खाल जहां 400-500 रुपये में बिकती हैं, वहीं ताज़ा कटी गायों की खाल 1000 से 1500 रुपये तक बिकती हैं तथा गोश्त 50 रुपये किलो के हिसाब से। हड्डियों आदि की कीमत अलग से। यदि कसाइयों का यह माल पुलिस के हाथ न लगता तो सीधे-सीधे छ:-सात लाख खरे थे। रोज़ाना यही काम करने वालों के लिए कभी-कभार पकड़े जाना कोई खास मायने नहीं रखता। आम तौर पर ये लोग़ अपना धंधा पुलिस से बाकायदा सांठगांठ करके चलाते हैं, लेकिन कभी-कभार ऐसा भी हो जाता है।

पुलिस द्वारा अपनाई जाने वाली प्रक्रिया के अनुसार जब भी कोई माल पकड़ा जाता है तो पुलिस तफ़्तीश द्वारा माल एवं मालिकान की पूरी तह तक पहुंचा जाता है। लेकिन इस मामले में मालिकान की तह तक पहुंचने की बजाये पकड़े-पकड़ाये मालिकान को तो छोड़ ही दिया गया, माल भी उन्हें दिलाने का प्रयास किया गया, भले ही वह असफ़ल रहा।

इसी डॉक्टर का दूसरा कारनामा देखिये। फ़रवरी माह के पहले सप्ताह में डॉक्टर साहब ने टटलू काटने वाले सात लोगों के गिरोह को पकड़ा। (मेवाती भाषा में सोने की नकली ईंट बेच कर ठगी मारने को टटलू काटना कहा जाता है) इनके नाम हैं, जमशेद पुत्र हड्डू निवासी गांवड़ी राजस्थान, रफ़ीक पुत्र महमूद निवासी गांवड़ी, साजिद पुत्र शम्सु निवासी बिसम्बरा थाना शेरगढ़ (कोसी, यूपी),शकरूल्ला पुत्र कल्लू निवासी बिसम्बरा, आरिफ़ पुत्र इकबाल निवासी सतेराबास, थाना नगीना, शरीफ़ पुत्र अली मोहम्मद जाति फ़कीर निवासी नई बस्ती जटारी थाना टप्पल तथा आसू पुत्र फ़िरोजा निवासी खंदावली। इस गिरोह से डॉक्टर ने मौके पर जामा तलाशी में 40000 रुपये नकद तथा सोने की नकली ईंट में से एक तोला सोना बरामद करके इन्हें बिना किसी लिखत-पढ़त के हवालात में बाड़ दिया। जब पांच-छ: दिन हो गये तो इनके वारसान ने डॉक्टर के उच्चाधिकारी से 'बातचीत' की। उच्चाधिकारी मौके पर पहुंचा और सारा खेल देखा व समझा। बिना किसी लिखत-पढ़त के इस तरह से किसी को हवालात में बंद रखना जुर्म है जिसका दोषी डॉक्टर बनता था। इसके एवज में उस उच्चाधिकारी ने जामा तलाशी के 40 में से 20000 तथा दो लाख अतिरिक्त उन दोषियों से वसूल कर उन्हें मुक्त कर दिया। उस उच्चाधिकारी ने दो लाख में से 60000 डॉक्टर को देने की पेशकश भी की थी जिसे डॉक्टर ने यह कहते हुए ठुकरा दिया कि लूं तो आधे लूं नहीं तो रहने दो। डॉक्टर कर कुछ सकता नहीं था, क्योंकि खुद फंसता था।

इन्हीं दिनों में डॉक्टर ने गांव मोदमका, निकट गुराक्षर, थाना हथीन में एक बड़ी रेड मारी जिसमें एक डीएसपी सेठी को भी इसने साथ लिया था। इस रेड में इसने खेत में ट्रैक्टर चलाते को पकड़ लिया जिससे 80 हज़ार नकद वसूल कर फ़ारिग कर दिया। अभी पहली अप्रैल को एक सूचना के आधार पर नाका लगा कर इसने पलवल से बोलेरो गाड़ी लाते तीन लड़कों को पकड़ लिया। इनमें से जीतू व प्रिंस पलवल के मोहल्ले नीमथला के निवासी हैं। बोलेरो तो डॉक्टर ने अपने कब्ज़े में ले ली तथा साढ़े तीन लाख लेकर दोनों को फ़ारिग कर दिया।

अधिकारी ही पालते हैं पुलिस में डकैत

आम तौर पर महकमे में नया भर्ती होने वाला डाके मारने की नीयत से नहीं आता, वह ईमानदारी एवं निष्ठापूर्वक ड्यूटी करने की नीयत से आता है। कुछ भ्रष्ट अधिकारियों की कभी न मिटने वाली भूख उन्हें लूट-मार के लिए प्रेरित एवं उत्साहित करती है। फ़िर एक-दूसरे को देख कर अन्य भी लूट-मार के रास्ते पर चलने लगते हैं। कहने की जरूरत नहीं कि लुटेरे एवं भ्रष्ट अफ़सर राजनेताओं की पहली पसंद होते हैं। जो जितना बड़ा भ्रष्ट होगा, वह उतना ही बड़ा चापलूस होगा तथा नेताओं के एक इशारे पर कुछ भी कर गुजरने के लिए सदैव तत्पर रहेगा।

फ़रीदाबाद में तैनाती से पूर्व डॉक्टर की सारी नौकरी गुड़गांव ज़िले की रही है। वहां पूरे ज़िले की फ़ोर्स में यह फ्रॉड एवं डकैत के नाम से जाना जाता था। जानकार बताते हैं कि जब वी.बी.सिंह डीजी कानून एवं व्यवस्था थे तो वे इसको भरी मीटिंग में डांटते-फटकारते थे, खूब ज़लील करते थे, लेकिन नीचे आईजी महेन्द्र लाल तथा ऊपर डीजी दलाल के संरक्षण के चलते इस पर कोई आंच नहीं आती थी। वी.बी.सिंह खून का घूंट पी कर रह जाते थे। लेकिन जब से गुड़गांव में आईजी का पदभार एस.एस.देशवाल ने संभाला, इसे ऐसा बर्फ़ में लगाया कि लूट-मार का कोई मौका ही नहीं मिला। तमाम हथियार चलाने के बावजूद गुड़गांव में इसकी दाल नहीं गली तो इसने फ़रीदाबाद आने में ही भलाई समझी। यहां आते ही तो इसकी मौजां लग गयी। यह ज़िला तो जैसे इसका इंतज़ार ही कर रहा था। आते ही सीआईए बल्लबगढ़ चौकी का इंचार्ज तथा दौड़-भाग के लिए गाड़ी-घोड़े सब मुहैया करा दिये गये। इसे खुली छूट है कि फ़रीदाबाद, गुड़गांव, मेवात जहां जब मर्जी डकैतियां मारे, कोई पूछने वाला नहीं, हां यदि इसके काम में कोई अड़ंगेबाजी पैदा करे तो उसे जरूर ऊपरी आदेशों द्वारा दूर हटा दिया जाता है।

ऊपर से मिली इस छूट एवं संरक्षण के चलते यह थानेदार अपराधियों को पकड़ने और अपराधों को रोकने की बजाय उनसे अपने संबंध प्रगाढ़ करने में जुटा रहता है ताकि वे अधिक से अधिक लूट-मार करें और इसको हिस्सा दें। इससे अपराधियों के हौंसले व अपराध इस कदर बढ़ रहे हैं कि वे कर्त्तव्यनिष्ठ ईमानदार पुलिसकर्मियों पर रेड के दौरान हमला करने तक से भी नहीं घबराते।

नक्सलवाद : अंजाम क्या होगा ?

जिस संविधान, लोकतंत्र, कानून-व्यवस्था, जन कल्याण की दुहाई सरकार वहां दे रही है, वह सरकार यही उन क्षेत्रों में देख ले जहां लोग़ों ने अभी अवज्ञा आंदोलन नहीं छेड़ा है, हथियार नहीं उठाये हैं और पूरी तरह शांत हैं। पुलिस की लूट-खसूट किसी से छिपी नहीं है, जनता से वसूला गया सारा पैसा शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं की बजाये शासक वर्गों की ऐय्याशियों पर खर्च हो रहा है। विकास कार्यों को भ्रष्टाचार लील रहा है, सरकारी मशीनरी पूरी तरह नाकारा व अकर्मण्य हुई पड़ी है। सरकारी भोंपू जो चाहे कहते फ़िरें, चिदंबरम की सेना उन इलाकों में केवल इसलिए खूनी खेल खेलने जाती है ताकि उन लोगों को भी शासक वर्गों की भूख का निवाला बनाया जा सके जिन्होंने इनकी गुलामी की जंजीरें तोड़ कर मुक्त होने का प्रयास किया है। यहां गौरतलब बात यह भी है कि सीआरपीएफ के मरने वाले 75 जवानों में से एक भी तो छत्तीस गढ़, मध्यप्रदेश, झारखंड, बिहार, बंगाल, आंध्रप्रदेश या उड़ीसा का नहीं था। मरने वाले सारे जवान भाड़े के सैनिकों की ही भूमिका निभा रहे थे। जिन इलाकों में नक्सलियों के सफ़ाये के लिए केंद्र अर्द्ध सैनिक बल भेज रहा है, क्या उन इलाकों में जवान नहीं पैदा होते? क्यों नहीं वहीं के जवानों को इन बलों में भर्ती किया जाता? कारण स्पष्ट है। वहां के लोग़ शासक वर्गों की बदमाशियों व लूट-खसूट से पूरी तरह वाकिफ़ हैं। इसलिए वहां के लोग़ आसानी से सरकार के बहकावे में आने वाले नहीं हैं। वे लोग़ अच्छी तरह समझते हैं कि उनका संघर्ष रोज़ी, रोटी व ज़िन्दा रहने का संघर्ष है। वे लड़ाके किसी भाड़े या लूट-खसूट के लिए नहीं लड़ रहे हैं।

एक प्रश्न रह-रह कर उठता है कि उनके पास धन व हथियार कहां से आते हैं? यह भी आरोप लगता है कि वे ग़रीब जनता से लेवी वसूलते हैं, ठेकेदारों से दस प्रतिशत तक वसूलते हैं आदि-आदि। सरकार भी तो तरह-तरह के टैक्स लगा कर देश की जनता से जबरन वसूली करती है। ग़रीब से ग़रीब आदमी की भी आधी कमाई अप्रत्यक्ष करों के रूप में वसूल कर लेती है, जिसके बदले सरकार उन्हें कुछ भी नहीं देती। जबकि नक्सली लेवी के बदले उन्हें रोज़ी-रोटी व जीने का अधिकार दिलाते हैं, जिन जंगलों से इन्हें पशुओं की तरह खदेड़ दिया गया था, जिन जंगलों की उपज पर ठेकेदार व शासक वर्ग ऐय्याशी करते थे, वे उन्हें फ़िर से दिलाये गये हैं। लेकिन इस सबका तात्पर्य यह कदापि नहीं है कि नक्सलियों की राजनीतिक सूझ एकदम सही है और वे अंतत: इस पूंजीवादी व्यवस्था एवं सरकार को पूर्णतया ध्वस्त कर ही देंगे। यह एकदम असंभव है। दरअसल, नक्सली जिस देशी-विदेशी पूंजी के विस्तार को उस क्षेत्र में घुसने से रोकना चाहते हैं, उसे वह बहुत दिनों तक रोक नहीं सकते। उस क्षेत्र की प्रचुर प्राकृतिक संपदा का दोहन करने के लिए देशी-विदेशी पूंजी लालायित है और वह वहां घुस कर रहेगी। इसके परिणामस्वरूप वह क्षेत्र कृषक बाहुल्य से औद्योगिक मज़दूर बाहुल्य हो जायेगा जो कि सर्वहारा समाजवादी क्रांति का अनिवार्य पड़ाव है।

पाठक मंच

मज़दूर मोर्चा का नया अंक मिला। जज निर्मल यादव पर मुकदमा चलना चाहिए। जहां तक उच्चतम न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश एवं विधि मंत्री वीरप्पा मोइली द्वारा निर्मल यादव को बचाने की कोशिश करने का मामला है, इससे स्पष्ट हो गया है कि सभी चोर हैं और संकट आने पर सब एक-दूसरे की खाल को बचाना चाहते हैं। जहां तक पुलिस में मौजूद डकैतों का सवाल है, यह कोई नयी बात नहीं है। हर जगह पुलिस वर्दी में डाकू और दरिंदे भरे पड़े हैं। हां, इनकी नानी तब मरती है जब इनका सामना नक्सलवादियों से होता है। बाबरी मस्जिद ध्वंस के लिए दोषी कौन, टिप्पणी में यह सही सवाल उठाया गया है कि क्या इसके लिए कांग्रेस जिम्मेदार नहीं है? पाश की कविता बार-बार पढ़ने के बाद भी और पढ़ने की इच्छा होती है। गपशप कॉलम अच्छा है। इसे चलाते रहें। अंक में प्रकाशित अन्य लेख और समाचार भी अच्छे लगे।

-प्रकाशचंद, फरीदाबाद

मज़दूर मोर्चा का अंक मिला। पढ़ने से पता चलता है कि आपकी कलम स्वतंत्र एवं निर्भीक है, तभी तो आपने निर्मल यादव के मामले को उठाया है और साफ़ लिखा है कि पुलिस में डाकू मौजूद हैं। ये डाकू अपनी बेवकूफ़ी, लालच और आपसी टकराव के कारण पकड़ लिये गये। न पकड़े जाते तो कौन जानता कि पुलिस महकमे में भला ऐसे भी अफ़सर हैं। बाबरी मस्जिद के ध्वंस पर टिप्पणी अच्छी लगी। भ्रष्टाचार के मुद्दे पर जो टिप्पणी लिखी गई है, वह एकदम सटीक है। इसके अलावा राहुल सांकृत्यायन पर डॉ. खगेन्द्र ठाकुर का लेख भी काफ़ी अच्छा लगा। लोग़ों को ठगने में लगा बाबा लेख में आपने जनता को सचेत करने का अच्छा प्रयास किया है। आज ऐसे पाखंडी बाबाओं की कोई कमी नहीं जो धर्म के नाम पर जनता की आंखों में धूल झोंक कर उन्हें ठगने में लगे हैं। यही नहीं, आश्चर्य की बात तो यह है कि भगवाधारी मनुष्यरूपी ये राक्षस देह के कारोबार में लगे हैं और धड़ल्ले से कॉलगर्ल रैकेट चलाते हैं। आपने इनकी असलियत को उजागर कर बहुत ही प्रशंसनीय कार्य किया है। अन्य लेख भी पसंद आये।

-रमेश कुमार, पलवल

मज़दूर मोर्चा का नया अंक मिला। सारी सामग्री पढ़ने के बाद लगा कि यह एक धारदार अखबार है। इस अंक में जितने भी लेख और समाचार प्रकाशित हैं, सब में आपने सच लिखा है और जहां तक हो सके वर्तमान व्यवस्था पर वार करने की कोशिश की है। पाखंडी बाबाओं से जनता को सावधान कर आपने बहुत ही अच्छा काम किया है। आज के बाबा और संत गेरुए की आड़ में कौन-सा काम नहीं कर रहे हैं। ये सेक्स रैकेट चला रहे हैं तो आश्रम में रहने वाली साध्वियों से बलात्कार कर रहे हैं। अभी हाल में ही खबर आई कि एक पाखंडी बाबा ने एक महिला को पुत्र रत्न प्राप्ति का आशीर्वाद देने के बहाने उसे नशीली चीज़ भभूत में मिला कर खिला दिया और महिला के बेहोश हो जाने के बाद उससे बलात्कार किया और उसकी ब्लू फ़िल्म भी बना डाली। आज जितने भी बाबा हैं, लगभग सभी ठग और बदमाश हैं। इनसे जनता को सचेत रहने की जरूरत है। राहुल सांकृत्यायन पर डॉ. खगेन्द्र ठाकुर का लेख बहुत ही अच्छा लगा। पाश की कविता बेहद पसंद आई। गप-शप कॉलम अच्छा लगा।

-राकेश सिन्हा, गुड़गांव

मज़दूर मोर्चा का अंक मिला। पहली ही ख़बर पढ़ने से यह लगा कि यह अपने आप में एक अलग ही अख़बार है। फ़िर मैंने सभी लेख और समाचार एक-एक कर पढ़ लिये। भ्रष्टाचार पर प्रकाशित लेख मुझे बहुत ही अच्छा लगा। यह ठीक है कि किसान और मज़दूर किस प्रकार भ्रष्टाचार करेंगे और देश में सबसे ज्यादा आबादी उनकी ही है। इस तरह यह साबित हो जाता है कि भ्रष्टाचार को अंजाम नेता, अफ़सर एवं व्यापारी ही दे रहे हैं। यह बात सच है कि सभी भ्रष्टाचारी नहीं हैं। ढोंगी बाबाओं पर प्रकाशित लेख भी बहुत अच्छा है। इस लेख को अधिक से अधिक लोग़ों तक पहुंचाना चाहिए।

-रामलोचन, गुड़गांव

गोरख पाडेय की कविता

बंद खिड़कियों से टकरा कर

घर-घर में दीवारे हैं
दीवारों में बंद खिड़किया हैं
बंद खिड़कियों से टकरा कर
अपना सिर
लहूलुहान गिरी पड़ी है वह
नई बहू है, घर की लक्ष्मी है
इनके सपनों की रानी है
कुल की इज्जत है
आधी दुनिया है
जहां अर्चना होती उसकी
वहां देवता रमते हैं
वह सीता है सावित्री है
वह जननी है
स्वर्गादपि गरीयसी है
लेकिन बंद खिड़कियों से टकरा
कर
अपना सिर
लहूलुहान गिर पड़ी है वह

कानून समान है
वह स्वतंत्र भी हैं
बड़े-बड़ों की नज़रों में तो
धन का एक यंत्र भी है
भूल रहे वह
सबके ऊपर वह मनुष्य है
उसे चाहिए प्यार
चाहिए खुली हवा
लेकिन बंद खिड़कियों से टकरा
कर
अपना सिर
लहूलुहान गिर पड़ी है वह

चाह रही है वह जीना
लेकिन घुट-घुट कर मरना भी
क्या जीना?
घर घर में श्मशान-घाट हैं
घर-घर में फांसी-घर हैं
घर-घर में दीवारें हैं
दीवारों से टकरा कर
गिरती है वह
गिरती है आधी दुनिया
सारी मनुष्यता गिरती है
हम जो ज़िंदा हैं
हम सब अपराधी हैं
हम दंडित हैं।